मृणालिनी मुखर्जी की कला यात्रा

— एक समीक्षात्मक अध्ययन

रूपरेखा

डा. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय,
आगरा

में

डाक्टर ऑफ फिलॉसफी की उपाधि हेतु
प्रस्तुत

विषय – चित्रकला (ललित कला संकाय)

द्वारा

अन्जली भारद्वाज

(रजि0नं. 145/2017 5729)

शोध निर्देशिका

डॉ. (श्रीमती) बिन्दु अवस्थी
एसो0 प्रोफेसर–चित्रकला विभाग
विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग

शोध केन्द्र
बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय,
आगरा (उ0प्र0)

वर्ष

2017

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोधार्थिनी **अन्जली भारद्वाज** द्वारा डॉ. भीमराव अम्बेदकर विश्वविद्यालय, आगरा में कला विषय के अन्तर्गत **मृणालिनी मुखर्जी की कला यात्रा–एक समीक्षात्मक अध्ययन** शोध विषय पर मेरे निर्देशन में कार्य प्रस्तुत किया जा रहा है । यह सर्वथा मौलिक है ।

मैं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करती हूँ।

दिनांक :

शोधार्थिनी

अन्जली भारद्वाज

निर्देशिका

डॉ. (श्रीमती) बिन्दु अवस्थी
एसोसिएट प्रोफेसर–कला विभाग
बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा

प्रधानाचार्या
बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा

अनुक्रमणिका

क्र0सं0		पृष्ठ सं0
1.	प्रस्तावना	01–05
2.	सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण	06–12
3.	शोध का उद्देश्य	13–14
4.	शोध की परिकल्पना	15
5.	शोध प्रविधि	16
6.	शोध की उपादेयता	16–17
7.	रूपरेखा	18–19
8.	संदर्भ ग्रन्थ सूची	20–22

मृणालिनी मुखर्जी की कला यात्रा
— एक समीक्षात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है । इसकी संस्कृति में बहुत विविधता है। कला समाज की उपजीव्य होती है समाज की जीवन दृष्टि, जीवन मूल्य, सुख, दुःख, निराशा अवसाद का प्रभाव चित्रकला पर पड़ता है तथा इसका समग्र रूप से प्रभाव गढ़ी गई कृतियों के रचियताओं तथा प्रणेताओं पर पड़ता है । चित्रकार की नवनवोन्मेषनी प्रतिभा ही कालजयी कृतियों को जन्म देती है। कृतियाँ जहाँ जीवन की व्याख्या करती है, वहाँ उसमें संस्कृति, इतिहास एवं धर्म दर्शन के भी विपुल संकेत विद्यमान हो जाते हैं । समकालीन समाज युक्ति तर्क पर आधारित है । विचार विश्लेषण और युक्ति के द्वारा जिन शिल्पियों का मन पूरी तरह प्रभावित है वही कला के विभिन्न आयामों को, अपनी लोक कला से जोड़कर उसको आधुनिकता के साथ समाहित करते हैं । अपनी अतीत की कला परम्परा व समकालीन कला को सम्मिलित कर नया सृजन करते हैं ।

आधुनिक चित्रकला के परिप्रेक्ष्य में जो कृतियाँ बनी हैं उन पर उस समय व काल का बहुत ही गहरा प्रभाव रहा है । सभ्यता का विकास एक दम वैज्ञानिक युक्तियों द्वारा नहीं चलता है, उस क्षेत्र में मानवीय युक्तियों का अवदान पर्याप्त है । मृणालिनी मुखर्जी समकालीन मूर्तिकला की धारा की मूर्ति शिल्पी है। बंगाल की लोक कला से प्रभावित जूट की रस्सी को पुनः परिभाषित करके अलग–अलग रूपकारों के साथ अनूठा काम किया है । इनके माता पिता दोनों प्रख्यात चित्रकार एवं मूर्तिकार रहे हैं एवं बंगाल की कला से प्रभावित रहे हैं तथा बंगाल के जन–जीवन से घुल मिल गये

हैं । ऐसे कलात्मक वातावरण में मृणालिनी मुखर्जी का जन्म 1949 में मुम्बई में हुआ था। यह सुप्रसिद्ध चित्रकार विनोद बिहारी मुखर्जी और मूर्ति शिल्पी माँ लीना मुखर्जी की इकलौती संतान हैं। मृणालिनी मुखर्जी साहसी मस्तमौला व्यक्तित्व की धनी रही है । अपनी जड़ों से जुड़कर भी आधुनिक रूपों की रचना करने वाली और दयालु रही हैं । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा देहरादून में हुई है तथा छुट्टियाँ शांति निकेतन के कलामय वातावरण में व्यतीत होती थी । देहरादून से हाईस्कूल पास करने के बाद मृणालिनी मुखर्जी ने बड़ौदा विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग में अपना आगे का अध्ययन पूर्ण किया । यह अपने कला गुरू के.जी. सुब्रम्यणयम से बहुत प्रभावित रही मृणालिनी मुखर्जी के व्यक्तित्व पर इनके गुरू का प्रभाव पड़ा है । मृणालिनी मुखर्जी का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा का धनी रहा है । उन्होंने जूट को अपने मूर्ति शिल्पों के माध्यम के रूप में चुना है ।

मृणालिनी मुखर्जी बंगाल के स्वदेशी आन्दोलन से प्रभावित रही है तथा उसी से प्रभावित होकर उन्होनें अपने शिल्प में बंगाल में आसानी से उपलब्ध तथा लोककला में प्रयुक्त जूट को अपने शिल्पों में माध्यम के रूप में चुना। इसके साथ ही साथ मुखर्जी ने सेरेमिक, तांबा व टेरीकोटा तथा एचिंग की विधाओं में कार्य किया है मुख्य रूप से उन्होंने प्राकृतिक रेशों को लेकर उनको तैयार कर गांठ वाले जाल बुनकर शिल्पों की रचना की है । मृणालिनी मुखर्जी ने जिस गांठ का प्रयोग अपने शिल्पों में किया है वह मछुआरे अपने जाल (Marcame Knot) में लगाते हैं तथा जाल बुनते हैं । उन्होंने माध्यमों की सीमा की गांठ को अपने दुःसाहसी प्रयोग से खोल दिया है । कलाकार के रूप में मृणालिनी मुखर्जी के मूर्ति शिल्प भावनाओं को अभिव्यक्त करने में उनकी निपुणता को प्रदर्शित करते हैं । उनके कार्यस्थल दिल्ली, भोपाल, बड़ौदा, कलकत्ता

आदि रहे हैं । मृणालिनी मुखर्जी ने अपने मूर्ति शिल्पों में प्रकृति को देवता के रूप में माना है जो कि उनके अपने देवता है । उनका आकार मंदिर में स्थित मूर्तिशिल्पों के जैसा नहीं है । मुखर्जी ने बहुत ही गहन कला साधना की है । मृणालिनी मुखर्जी ने जो माध्यम कला की अभिव्यक्ति के लिए चुना उसमें काफी धैर्य की आवश्यकता होती है तथा शिल्प को तैयार होने में काफी समय लगता है । अपने मूर्ति शिल्पों पर उन्होंने गढ़ी स्टूडियों (दिल्ली) में काम किया है । गढ़ी में एचिंग में भी काम किया है। बड़ौदा में मुख्यतः उन्होनें काष्ठ छापों व लीथोग्राफ में काम किया था ।

1977–1978 में मृणालिनी को ब्रिटिश काउंसिल स्कॉलरशिप मिली और उन्हें पश्चिम में रहकर अपने काम को जानने व समझने का मौका मिला तथा वहाँ उन्होंने चीजों को देखा और खूब देखा है। मृणालिनी मुखर्जी के चित्रों के विषय प्रकृति सम्बन्धित रहे हैं उन्होंने देवी देवताओं को अपने चित्रों का विषय बनाया है । लैण्ड स्केप को आधार बनाकर उन्होंने पेड़ों व वनस्पतियों को अपने छापों का विषय बनाया है । मृणालिनी मुखर्जी ने अपने मूर्ति शिल्पों की रचना के लिए रस्सियों के बोरे खरीदती थी जो कि मुख्य रूप से बंगाल तथा गुजरात से आते थे । मृणालिनी मुखर्जी के चित्रों में कलात्मक सौन्दर्य दृष्टिगोचर होता है । मुखर्जी ने मौलिक रूपाकारों की रचना की है तथा बैंजनी, हरे, नीले, काले तथा सुनहरे, तमाम तरह के रंगों को विशेष बनावट पाने के लिए मुखर्जी ने स्वयं की देखरेख में इन रस्सियों को रंगाया है । उनके रूपाकारों में रहस्यात्मकता है प्राकृतिक रूपों को उन्होंने मुख्य रूप से अपने सृजन का विषय बनाया है । कलाकार को अपना रास्ता खुद ही खोजना पड़ता है–सवाल करने की दृष्टि काम करती है ।

मृणालिनी मुखर्जी ने स्त्री की खास तरह की संवेदना के महत्व को स्वीकार

किया है लेकिन स्त्री चित्रकार के नाम पर हर तरह के काम को एक जगह रख देने में मृणालिनी मुखर्जी का विश्वास नहीं रहा है । एक स्त्री होने की दूसरी समस्यायें हो सकती है परन्तु एक कलाकार के रूप में स्त्री होने के कारण कोई नुकसान उनको नहीं हुआ है । मृणालिनी मुखर्जी सिनेमा देखने की शौकीन व चाक्षुष कलाओं में उनकी दिलचस्पी ज्यादा रही है। मृणालिनी के साथी कलाकार उनको दिलरूबा (डिलु) कहकर सम्बोधित करते थे । साहित्य व संगीत को मुखर्जी अधिक समय नहीं दे पाई । परन्तु उन्हें गुनगुनाने का शौक रहा है । जहाँ तक कला परम्परा से प्रेरणा पाने का प्रश्न है मृणालिन मुखर्जी ने तमाम स्रोतों से सीखा है। मुखर्जी अपने महाबलीपुरम के अनुभव से प्रभावित रही है। मुखर्जी ने अपने मूर्ति शिल्पों में देवताओं की रचना की है परन्तु वह यह बताना नहीं भूली की यह उनके स्वयं के देवता है । इस प्रकार मृणालिनी मुखर्जी का बहुमुखी व्यक्तित्व रहा है। राजनैतिक व सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव भी समाकलीन कला पर पड़ा है । ऐसी कृतियों से सदा ही स्फूर्ति मिलती है तथा राष्ट्रीयता एवं सुधार की भावना को बल मिलता है । समकालीन कला परम्परा के कगारों को तोड़ती है तथा प्रयोग के फूल बिखेरती है ।

मृणालिनी मुखर्जी समकालीन भारतीय कला की अपनी विधा की एकमात्र ऐसी ख्यातिमान कलाकार है जिनके मूर्ति शिल्पों के बारे में ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है । मृणालिनी मुखर्जी की मृत्यु फरवरी 2015 में हुई । जब ट्रासफिगरेशन नाम से इनके शिल्पों की प्रदर्शनी नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट में शुरू होने वाली थी तभी अचानक वह बीमार पड़ी उन्हें अस्पताल ले जाया गया किन्तु वह नहीं बच सकीं । वह अपनी प्रदर्शनी का उद्घाटन होते देखना चाहती थी इसके लिये उन्होंने डाक्टरों से प्रार्थना भी की थी । इसके मूर्तिशिल्प जूट से बने होने के कारण देर से

कला जगत में मान्य हुए किन्तु उन्होंने जो इस माध्यम से कर दिखाया वह अनूठा, अतुलनीय है अतः उनके कार्य की सराहना होने लगी । उन्होंने अपनी लगन, निर्भीक स्वभाव, कार्य के प्रति समर्पण, फुर्ती आधुनिक सोच से ऐसे शिल्प गढ़ दिये जिनका कोई सानी नहीं है । आगे समकालीन कला जगत में उनका नाम बहुत आदर के साथ लिया जाता है ।

उनके मूर्ति शिल्प कला के भविष्य की दशा तथा निरन्तर नया करने की ओर प्रेरित करते हैं । अतः उनका कलाकार एवं व्यक्ति के रूप में व्यक्तित्व स्मरणीय हैं और शोध का विषय है जिनसे मैं प्रेरित हुई हूँ।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

1989 ''इण्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडी'' ''आर्टिस्ट ऑन आर्ट'' नायक पुस्तक में मृणालिनी मुखर्जी के व्यक्तित्व की चर्चा की है । इस पुस्तक में स्पष्ट किया गया है कि क्या कारण रहा है कि मृणालिनी ने प्राकृतिक तन्तुओं को अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम चुना । इस पुस्तक में बताया है कि बंगाल आन्दोलन का उनके जीवन पर प्रभाव पड़ा । इसमें स्पष्ट किया गया है कि उन्होंने अपनी औपचारिक शिक्षा बड़ौदा के महान चित्रकार के.जी. सुब्रामण्यम के सानिध्य में प्राप्त की । इस पुस्तक में बताया है कि उन्होंने माध्यम तथा माध्य दोनों को प्रकृति के रूप में चुना ।

1989 भारद्वाज विनोद ''आधुनिक कला कोश'' इसमें लेखक ने मृणालिनी मुखर्जी के बारे में विस्तार से बताया है । उन्होंने बताया है कि तन्तु शिल्प आधुनिक कला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है । इस पुस्तक में मृणालिनी के बारे में यह बताया गया है कि वह अपने माध्यम की नवीनता को रेखांकित नहीं करना चाहती थी। यह स्पष्ट किया है कि तन्तु मूर्ति शिल्प में काम होता रहा है तथा आज भी काम हो रहा है तथा मृणालिनी का कार्य क्षेत्र बहुत ही गहन तथा स्त्री के विविध आयामों को प्रदर्शित करता है ।

Sculptor Minalini Mukherjee uses hemp to Marry carft google weblight.com/igu=http://in high art. 10 अक्टूवर, 1995 मधु जैन ''मूर्ति शिल्पी मृणालिनी मुखर्जी अपने क्राफ्ट में काफी ज्यादा जूट का प्रयोग करती थी उन्होंने अपने काम में जूट का मुख्य रूप से प्रयोग किया है । उन्होंने मुख्य रूप से प्राकृतिक रेशों का प्रयोग किया है तथा उसमें विभिन्न रूपाकारों को रचा है ।

1997 वडेरा आर्ट गैलरी ''इण्डियन कन्टेम्पररी आर्ट पोस्ट इन्डिपेन्डेंस'' इस पुस्तक में मृणालिनी मुखर्जी के जन्म के बारे में बताया गया है । इसमें बताया गया है कि मृणालिनी ने अपन स्नातक एम.एस. विश्वविद्यालय से 1965 से 1970 के मध्य पूर्ण किया । उन्होंने म्यूरल डिजायन में अपना पोस्ट डिप्लोमा किया । इस पुस्तक में बताया गया है कि मृणालिनी मुखर्जी ने इसी समय में अपने कार्य में प्राकृतिक रेशों के प्रयोग की शुरूआत की तथा उनको एक स्कॉलरशिप मिली ब्रिटिश काउंसिल की तरफ से जोकि उनको मूर्ति शिल्प के लिए प्राप्त हुई । मृणालिनी ने चीनी मिट्टी में भी कार्य किया है । मृणालिनी मुखर्जी समकालीन कला की अद्वितीय आवाज है ।

विक्टोरिया लेयान अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका वाल्यूम 1, 2003 टैक्स टाइल क्लाथ एण्ड कल्चर ''इण्डिया इनसाइड आउट क्रिटिकल प्रोस्पैक्टिव ऑन द वर्क ऑफ मृणालिनी मुखर्जी'' इस लेख में लेखिका ने मृणालिनी मुखर्जी के कार्य की चर्चा की है कि किस प्रकार उनका काम भारत और यू.के. दोनों जगह प्रसिद्ध है इसमें बताया गया है कि मृणालिनी ने बनावट से जो मूर्ति शिल्पों की रचना की है इसने कपड़े और मूर्ति शिल्प की दूरी को समाप्त कर दिया है । इस पर चर्चा की है ।

2005 अमृता जावेरी ''कन्टेम्पररी इण्डियन आर्टटिक्ट'' नामक अपनी पुस्तक में इस बात को स्पष्ट किया है कि मृणालिनी मुखर्जी ने प्राकृतिक तंतुओं से निर्मित मूर्ति शिल्प वह 1971 से बना रही है । इस पुस्तक में बताया है कि उन्होंने पुष्प नामक मूर्ति शिल्प 1993 में बनाया था । उनका कार्य प्रकृति और स्त्री के सिद्धांतों पर आधारित है । इस पुस्तक में बताया गया है कि उन्होंने वन राजा King of the forest (1991–94) मूर्ति शिल्प बनाया है । चित्रकार ने प्राकृतिक माध्यम मिट्टी का भी प्रयोग किया है । उन्होंने चीनी मिट्टी से एक श्रृंखला बनाई है ।

2003 डा0 ममता चतुर्वेदी ''समकालीन भारतीय कला'' नामक पुस्तक में यह बताया है कि मृणालिनी मुखर्जी का जन्म ही कलामय वातावरण में हुआ था । इस पुस्तक में चर्चा की गई है कि उन्होंने अपने मूर्ति शिल्पों का सृजन प्राकृतिक तन्तुओं से किया है । इसमें बताया है कि मृणालिनी ने जूट की रस्सी, सुतली व डोरी से शिल्प बनाये हैं। उन्होंने अपने मूर्ति शिल्पों में धातु के छल्लों का प्रयोग किया है । जो कि उनके शिल्प को निर्धारित आकार व आधार प्रदान करते हैं । इस प्रकार लेखिका ने उनके शिल्पों एवं उसकी तकनीक के विषय में विस्तार से बताया है ।

2007 ''आर्ट अलाइव गैलरी'' से प्रकाशित पुस्तक में मृणालिनी मुखर्जी द्वारा निर्मित शिल्प की चर्चा की गई है । इसमें यह स्पष्ट किया गया है कि वह किस प्रकार से मूर्ति शिल्पों को गढ़ती है तथा उन्होंने आर्ट और क्राफ्ट की सीमा रेखा को बहुत ही आसानी से पार कर दिया है । लेखक ने चित्रकार के व्यक्तित्व की इस पुस्तक में चर्चा की है । उन्होंने अपने मूर्ति शिल्पों में सौम्य रंगों का प्रयोग किया है ।

अप्रैल 2010 गैलरी एस्केप ''लावा'' एक प्रदर्शनी ताँबों की मूर्तियों पर मृणालिनी मुखर्जी द्वारा इस लेख में रेनू मोदी ने मृणालिनी के ताँबें से निर्मित मूर्ति शिल्प के विषय में बताया है इसमें बताया गया है कि मृणालिनी ने मुख्य रूप से भारतीय संस्कृति और प्राकृतिक माध्यम को लेकर कार्य किया है । इस लेख में उनके द्वारा किये गये ताँबे के मूर्ति शिल्पों के विषय और बनाने की तकनीक पर चर्चा हुई है ।

2015 मीनाक्षी काजरीवाल (भारती) ने ''भारतीय मूर्ति शिल्प एवं स्थापत्य कला'' नामक पुस्तक में मृणालिनी मुखर्जी के फाइबर तथा रस्सी से बने मूर्ति शिल्प के बारे में बताया है । इस ग्रंथ में मृणालिनी मुखजी द्वारा निर्मित मूर्ति शिल्प पुष्प द फ्लावर

जिसका माध्यम उन्होने सन की रस्सी को चुना है यह इस विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है ।

हिन्दुस्तान टाइम्स Breaking barriers : An ode to Master Sculptor Mrinalini Mukheerjee : इस समाचार पत्र में मृणालिनी मुखर्जी के बारे में बताया गया है । उनके मूर्ति शिल्पों के बारे में चर्चा की गई है । उनकी मूर्ति शिल्प की प्रदर्शनी राष्ट्रीय आधुनिक चित्रकला वीथिका में लगाई गई थी ।

2015 एन.डी.टी.वी. शिखा त्रिवेदी ''मृणालिनी मुखजी ब्रिलिएन्ट प्योर आर्टिस्ट विद ऑल दैट एलीमेन्टस'' अपने इस लेख में लेखिका ने मृणालिनी मुखर्जी की कला प्रदर्शनी की चर्चा की है । इसमें उन्होंने बताया है कि मुखर्जी के 50 साल के काम का प्रदर्शन राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथिका में हुआ था । इसमें मृणालिनी को ''दिलरूबा (डिलु) कहकर उनके मित्र व जानने वाले बुलाते थे इस की चर्चा हुई है । इसमें उन्होंने किस–किस को माध्यम के रूप में चुना है इस पर बताया है ।

2015 आउटलुक – इस पत्रिका में मूर्ति शिल्पी और कलाकार मृणालिनी मुखर्जी के विषय में चर्चा की गई है पत्रिका में मृणालिनी के माता पिता के विषय में बताया गया है कि इसमें इस बात को स्पष्ट बताया है कि चित्रकार अपने मूर्ति शिल्पों में जूट के रेशों का गॉठ लगाकर प्रयोग करती थी । ताँबे के मूर्तिशिल्प भी बनाये हैं यह उनके क्यूरेटर पीटर नेगी थे बताया है ।

अन्तर्राष्ट्रीय लेख Feb. 05, 2015 Art Asia Pacific By Siobhan Bent "Indian Sculptor Mrinalini Mukheerjee Dies At 65. इसमें लेखक ने यह स्पष्ट किया है मृणालिनी ने अपने जीवन को किस प्रकार शुरू किया उनकी कला यात्रा किस प्रकार से शुरू होकर अपने चरमोत्कर्ष पर पहुॅची यह दर्शाया गया है ।

Pablo Bartolomw Indianquarterly com/burning-brigh "The Indian Quarterly Burning Bright. इस लेखक ने अपनी एक मित्र को अपना लेख प्रस्तुत किया है । उन्होंने लिखा है कि दोस्ती एक अजनबी वस्तु है लेखक ने उनके व्यक्तित्व के बारे में चर्चा की है जो कि बिंदी लगाती थी जिनका स्वभाव बहुत ही बिन्दास रहा है अपने जीवन को मृणालिनी ने मस्तमौजा अंदाज में जिया है । इसमें लेखक ने अपनी मित्रता से जुड़ी हुई अपनी स्मृति के बारे में चर्चा की है । इस लेख में यह चर्चा की गई है कि मृणालिनी ने अपने पिता विनोद बिहारी मुखर्जी के काम के प्रदर्शन के लिए मोनोग्राम तैयार किया। इस लेख में बताया गया है कि मृणालिनी का जो काम है वह खुरदरे सतह पर है क्योंकि उनका माध्यम जूट है।

https://www.google.con.in Rashmi R. का लेख इस लेख में यह बताया गया है कि आप एक आकृति की रचना कैसे कर सकते हैं जब आप इससे पहले कभी अपने जीवन में नहीं मिले हैं । इस लेख में मृणालिनी मुखर्जी की अंतिम प्रदर्शनी की चर्चा की गई है न कि किस प्रकार से उनका कार्य राष्ट्रीय आधुनिक कला वीथिका में प्रदर्शित हुआ है। इसके बारे में बताया गया है।

www.contemporary Indian Art.com/marinalini mukherjee.htm. "Contemporary India Art". इस लेख में मृणालिनी मुखर्जी के बाल्यकाल से लेकर उनके पूरे जीवन काल पर सीमित चर्चा की गई है । इस लेख में उनके माता पिता से लेकर उनके अध्ययन काल की चर्चा की गई है । इसमें बताया गया है कि मृणालिनी को यू.के. में म्यूजियम ऑफ मार्डन आर्ट आक्सफोर्ड में कला प्रदर्शनी के लिए 1994–95 में आमंत्रित किया गया । इसमें यह बताया गया है कि मृणालिनी ने हालैण्ड में एक कार्यशाला में 1996 में हिस्सा लिया ।

Reference.https://en.wikipedia.org.wiki Mrinalini Mukherjee form wikipedia. यहॉ पर मृणालिनी मुखर्जी के आरम्भिक जीवन उनकी शिक्षा उनके द्वारा प्राप्त स्कालरशिप की चर्चा की गई है । इसमें बताया गया है कि मृणालिनी मुखर्जी की पहली एकल प्रदर्शनी श्री धरणी कल दीर्घा में 1972 में प्रदर्शित हुई । इसमें उनकी विभिन्न कला प्रदर्शनियों के बारे में क्रमवार बताया गया है इसमें उनके काम का संग्रह कहाँ है यह बताया गया है ।

Reference https://the wire.in/2322/secular-deities-enchanted.plants Mrinalini Mukherjee at the ngma/ इस लेख में बताया गया है कि मृणालिनी मुखर्जी की करीबी मित्र नीलिमा शेख रही है । जो कि स्वयं भी एक समकालीन चित्रकार है । इसमें बताया गया है कि मृणालिनी का कार्य भारत भवन भोपाल, चण्डीगढ़ संग्रहालय टेंट मॉर्डन लन्दन संग्रहालय में संग्रहित है इस बारे में प्रस्तुत लेख में चर्चा की गई है। मृणालिनी पर अपने गुरू के.जी. सुब्रमण्यम का प्रभाव है इस बात की चर्चा की गई है ।

एलिजाबेथ कुरूविला "मृणालिनी मुखर्जी एक साहसिक चित्रकार (कलाकार)" refference http://www.livemint.com इस लेख में मृणालिनी मुखर्जी के साहसिक चारित्रिक गुणों की चर्चा की गई है । उन्होंने जूट को अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के माध्यम के रूप में क्यों चुना यह बताया गया है । इसमें बताया गया है कि मुखर्जी की माता मूर्तिशिल्पकार रही है तथा उन्होंने अपने शिल्पों में लकड़ी का उपयोग किया है। मुखर्जी ने अपने योगी मूर्तिशिल्प को स्वयं को समर्पित किया है इस बारे में चर्चा की गई है ।

निष्कर्ष एवं शोध अन्तराल की सार्थकता

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करने से मैंने पाया कि मृणालिनी मुखर्जी की कला के विषय में अब तक कला दीर्घाओं के क्यूरेटरों, कला आलोचकों, समीक्षकों उनके मित्रों, कलाकारों ने तथा पुस्तकों में मृणालिनी मुखर्जी के बारे में कम ही लिखा है और वह पर्याप्त नहीं है । इतने महान व्यक्तित्व एवं श्रेष्ठ मूर्तिकार के जीवन तथा कला के विषय में समीक्षात्मक अध्ययन करने की अत्यन्त आवश्यकता है । अतः मेरे द्वारा मृणालिनी मुखर्जी के विशेष रूप से जूट माध्यम चुने जाने तथा अन्य माध्यमों का प्रयोग कर ऊँचे–ऊँचे आधुनिक मूर्तिशिल्प बनाने की कला को लेकर लिखने का प्रयास सर्वथा नया होगा जो समकालीन कला एवं शोध में अपना योगदान देगा ।

शोध का उद्‌देश्य

मृणालिनी मुखर्जी कला जगत की निर्भीक, कार्य की पराकाष्ठा की सीमाओं को लांघ जाने वाली ऐसी कलाकार है जो मूर्तिकला में सर्वथा नये माध्यम जूट को लेकर कला जगत के सम्मुख आई । दृढ़ता से वह इस माध्यम में कार्य करती रही और सामान्य से हटकर इस मूर्तिकला में प्रयोग किये । आज उनके मूर्तिशिल्पों का कला जगत में विशिष्ट स्थान है । अतः ऐसी कलाकार जिसने अपना पथ स्वयं बनाया है उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, किशोरावस्था एवं शिक्षा दीक्षा एवं कलाप्रेम के विषय में जिज्ञासाओं को शान्त करना मेरे शोध का उद्‌देश्य है ।

मृणालिनी मुखजी के पिता एवं गुरू दोनों महान कलाकार रहे हैं । उन्होंने विदेशी तथा अन्य प्रचलित माध्यमों को छोड़कर बंगाल जूट जो कि लोक शिल्प का माध्यम था जो वहॉ पैदा भी होता था साथ ही उसका शिल्प भी उन्होंने देखा था । वहॉ के मछुआरे जो गॉठ अपने जाल में प्रयोग करते हैं उन्होंने उसे चुना अतः उनके भीतर जो लोककलाकार, शिल्पकार से लेकर आधुनिक शिल्पों के रूप गढ़ने की क्षमताओं वाला जो बहुमुखी व्यक्तित्व है उसका अध्ययन करना शोध का विषय है ।

मृणालिनी मुखर्जी ने अनेक स्थानों पर कार्य किया है । उनकी कला में जो रूपाकार गढ़े हैं उनके प्रति उनके अपने निजी विचार है साथ ही उनकी कला यात्रा दुस्साहसी अथक सी प्रतीत होती है जिसका अध्ययन प्रस्तुत शोध का विषय होगा । मृणालिनी मुखर्जी ने प्रकृति, जंगल तथा देवी देवताओं के विषय में तथा सूक्ष्म मूर्ति शिल्प बनाये है। उन पर विस्तार से प्रकाश डालना शोध का विषय है ।

मृणालिनी मुखर्जी ने प्रकृति के जिन रूपों को बनाया है वे सामान्य नहीं

दिखते । देवी देवताओं के रूप भी मंदिरों के देवी देवताओं से मेल नहीं रखते । साथ ही उनके मूर्तिशिल्पों में कुछ प्रतीकात्मक एवं सूक्ष्म रूप है अतः उनके चित्रों में कलात्मक सौन्दर्य का अध्ययन करना मेरा उद्देश्य है ।

मृणालिनी मुखर्जी ने किस प्रकार रूपों का संयोजन किया है तथा कैसे वर्ण विधान का चयन किया है इसका औपचारिक विश्लेषण किये बिना उनकी कृतियों के महत्व को नहीं जान सकते हैं अतः उनके मूर्ति शिल्पों का औपचारिक विश्लेषण करना शोध का विषय है ।

मृणालिनी मुखर्जी ने सुतली डोरी, जूट, धातु, सिरेमिक, फाइबर आदि माध्यमों में कार्य किया है परन्तु माध्यम को शिल्प में परिवर्तित करने से पूर्व वह किस प्रकार की तकनीक अपनाती थी उसका अध्ययन करना शोध का विषय है ।

मृणालिनी मुखर्जी स्वदेशी विचारधारा से प्रेरित थी बंगाल में यह विचारधारा जन जन में फैली हुई थी । अतः उन्होंने अपनी जड़ों अपने परिवेश से जुड़े माध्यम जूट तथा जूट के शिल्प को अपने मूर्तिशिल्पों में अपने अनुसार ढाला जो साधारण कार्य नहीं था । इस प्रकार उनके कार्यों के कारण कला जगत को मूर्तिशिल्पों को नया माध्यम मिला जिसको आधुनिक एवं समाकलीन मूर्तिशिल्प में महत्वपूर्ण स्थान है । इस शोध से कला जगत, शोधार्थी, शिक्षार्थी उनके कार्यों का अवलोकन कर सकेंगे ऐसा मेरा विश्वास है ।

अतः मृणालिनी मुखर्जी ने अपनी मूर्तिकला के माध्यम से कला, शिल्प, माध्य एवं रूपाकारों से जो अतुलनीय योगदान दिया है उसको मूल्यांकित करना प्रस्तुत शोध अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है ।

शोध की परिकल्पना

मृणालिनी मुखर्जी की कला यात्रा– एक समीक्षात्मक अध्ययन विषय सम्बन्धित उनके द्वारा शोध परिकल्पना में रचित विविध रूपों, प्रयुक्त माध्यमों एवं नवीन विषयक आयाम द्वारा कला के जिन पक्षों को लेकर कार्य हुआ है उसमें शोधार्थी ने पाया कि वर्तमान समय में समकालीन कलाकार ने माध्यम एवं लोक तत्वों को लेकर उसमें आधुनिकता का समावेश कर विविध नवीन रूपों की रचना की है । उन्होंने अपना मूल विषय प्रकृति को माना है तथा अपनी कृतियों को प्रकृति के नाम प्रदान किए हैं जैसे पुष्प, वन राजा, वन देवी इत्यादि ।

मृणालिनी मुखर्जी एक मूर्तिकार हैं किन्तु उनके मूर्तिशिल्प वैसे नहीं है जैसे कि पत्थर कास्य या फाइबर के मूर्तिशिल्प होते हैं न ही उनमें ये रूपाकार है जो हम देवी–देवताओं, मानवों एवं प्रकृति के रूपों में प्रायः देखा करते हैं । उनके जूट से बनने वाले मूर्तिशिल्पों को लटकाकर प्रदर्शित किया गया है । छल्ले के सहारे उन्हें टिकाया गया है ताकि उसके ढाँचे के सहारे ठीक से प्रस्तुत किया जा सके । उनके इस प्रयोग में कला को जो नया आयाम दिया है वह अतुलनीय है । उनके सराहनीय प्रयास ने समकालीन कला को योगदान दिया है उसे सबके सम्मुख लाने की परिकल्पना एवं प्रयास है । अतः प्रस्तुत शोध द्वारा मैं उसका साक्षात्कार कला जगत, शोधार्थियों तथा जन समाान्य तक करवा सकूँ। इससे भविष्य की कला एवं कला के माध्यमों के विस्तार की असीम सम्भावनाएँ उजागर होंगी जो भविष्य में शोधार्थियों को लाभान्वित करेगीं।

शोध प्रविधि

मैं विभिन्न माध्यमों से विषय का विश्लेषण करने के लिए विभिन्न पुस्तकालयों का भ्रमण करके प्राथमिक व द्वितीयक ऑकड़े (डेटा) एकत्रित करने में सक्षम हो पाउंगी। विभिन्न कला दीर्घाओं एवं संग्रहालयों में जाकर मृणालिनी मुखर्जी के कार्यों का एवं उनकी कला कृतियों का अवलोकन एवं सर्वेक्षण तथा सूक्ष्म निरीक्षण करूंगी । तत्पश्चात जो आंकड़े प्राप्त होंगे उनका विश्लेषण करके ग्राफ तथा चित्र रेखाचित्रों का भी प्रयोग करूंगी। मैं प्राप्त शोध अध्ययन से शोध ग्रन्थ को लिखने में (ए.पी.ए.) तरीके का पालन करूंगी । मैं अपने प्रस्तावित अनुसंधान को अधिकतम समर्थन प्राप्त करने के लिए विभिन्न व्यक्तियों से साक्षात्कार करूंगी।

जिन व्यक्तियों ने मृणालिनी मुखर्जी के साथ काम किया है उनसे मृणालिनी मुखर्जी का कला के प्रति दृष्टिकोण को जानने का प्रयास करूंगी।

हमारे सम्मानीय मार्गदर्शक शिक्षक और विश्वविद्यालय के नियमों और विनियमों के साथ सहयोग करूंगी ताकि **मृणालिनी मुखर्जी की कला यात्रा–एक समीक्षात्मक अध्ययन** मेरा शोध विषय कला पेशेवरों शिक्षकों, शोधार्थियों एवं कला रसिकों के लिए महत्वपूर्ण बन सके तथा उनके द्वारा किये गये कार्यों को समझने में उपयोगी हो सके ।

अध्ययन की उपादेयता

प्रस्तुत विषयानुसार यह दर्शाने का प्रयत्न किया गया है कि मृणालिनी मुखर्जी की कलायात्रा भारतीय जन जीवन से जुड़े माध्यम की कला है । अपने कला

कौशल से उन्होंने उस माध्यम से (जूट से) जिन आधुनिक समकालीन रूपों को जन्म दिया है वह अत्यन्त असाधारण है तथा उन्होंने जिस माध्यम को अपनी अभिव्यक्ति के लिए चुना और अपने शिल्पों की रचना की उनकी जिन विशिष्टिताओं से अधिकांश शोधार्थी अनभिज्ञ रह गये हैं उन विशिष्टताओं को प्रकाश में लाने का मेरा प्रयास है ।

मृणालिनी मुखर्जी के मूर्ति शिल्पों को तथा उनकी कार्य तकनीक एवं प्रणाली को समकालीन परिपेक्ष्य में कैसे सहयोगी तथा उपयोगी बनाया जा सके तथा अपने ज्ञान भण्डार में वृद्धि कर कसें, उसके महत्व से परिचित होने में यह अत्यन्त सहायक सिद्ध होगा । ऐसा मेरा विश्वास है ।

मृणालिनी मुखर्जी के बारे में आलोचकों, समालोचकों, कलाकारों, क्यूरेटरों द्वारा लिखे गये लेखों द्वारा उनकी कलकृतियों को प्रकाश में लाना तथा इसमें शोध की सम्भावनाओं को खोजने से जो जानकारी मिलेगी वह कला जगत के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण होगी ।

मृणालिनी मुखर्जी के शिल्पों का नवीन दृष्टि से अध्ययन तथा शिक्षा एवं कला के क्षेत्र में उपयोगी बनाना तथा कला के उपयोग की दृष्टि से उनके कार्यों का महत्व बताना उपादेय होगा । उनकी कला तकनीक एवं विधाओं को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपयोगी सिद्ध कर उसके महत्व को स्पष्ट करना ताकि कला जिस प्रयोगवादी दौर में है, उसमें मृणालिनी मुखर्जी द्वारा किये गये नये प्रयोग कलाजगत तथा अकादमिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। कला जगत कला प्रेमियों एवं छात्रों के लिए यह शोध निश्चित ही उपादेय होगा । ऐसा मेरा विश्वास है ।

मृणालिनी मुखर्जी की कला यात्रा

—एक समीक्षात्मक अध्ययन

रूपरेखा

भूमिका

अध्याय प्रथम

मृणालिनी मुखर्जी का जीवन परिचय

1.1 पारिवारिक पृष्ठभूमि

1.2 किशोरावस्था एवं शिक्षा

1.3 मृणालिनी मुखर्जी के कला सम्बन्धित विचार, कला साधना एवं कार्य स्थल

अध्याय द्वितीय

मृणालिनी मुखर्जी के कार्यों का वर्गीकरण

2.1 मूर्तिकार के रूप में

2.2 चित्रकार के रूप में

अध्याय तृतीय

मृणालिनी मुखर्जी के चित्रों के विषय

4.1 प्रकृति सम्बन्धी चित्र

4.2 देवी देवताओं से सम्बन्धित चित्र

4.3 सूक्ष्म चित्र

अध्याय चतुर्थ

(क) मृणालिनी मुखर्जी के चित्रों का कलात्मक सौन्दर्य

5.1 मौलिक रूपाकार

5.2 रहस्यात्मक एवं प्रतीकात्मक रूप

5.3 अलंकारिक रूप एवं प्राकृतिक रूप

(ख) मृणालिनी मुखर्जी के चित्रों का औपचारिक विश्लेषण

5.1 रूप संयोजन

5.2 वर्ण विधान

अध्याय पंचम

मृणालिनी मुखर्जी के चित्रों में माध्यमों का वैविध्य एवं कार्य तकनीक

6.1 सुतली, डोरी अथवा जूट

6.2 धातु

6.3 सेरेमिक

6.4 अन्य (फाइवर, लकड़ी, लीथोग्राफ, एचिंग इत्यादि)

अध्याय षष्ठ

मूल्यांकन

7.1 मृणालिनी मुखर्जी का पारम्परिक माध्यम (जूट) को आधुनिक आयाम तथा उसका समकालीन कला में योगदान

7.2 आधुनिक मूर्तिशिल्प को नवीनता प्रदान करने में योगदान

7.3 समकालीन कला जगत को मृणालिनी मुखर्जी की देन

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

हिन्दी ग्रन्थ

1. भारतीय प्रतिमा विज्ञान, सिन्हा श्री कमलेश, चन्द्र दिनेश डा. अयन प्रकाशन, नई दिल्ली 1990.
2. भारत का मूर्ति शिल्प, फाबरी चार्ल्स एल डॉ. राजपाल एण्ड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1970.
3. प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्ति कला, श्रीवास्तव ब्रज भूषण डॉ. विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 1990 द्विसं.।
4. मध्यकालीन भारतीय मूर्ति कला, तिवारी नन्दन मारूति डॉ. विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी 1991
5. भारतीय मूर्तिकला, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।
6. भारतीय चित्रकला, गैरोला वाचस्पति, मि.त्र प्रकाशन इलाहाबाद 1963.
7. आधुनिक कला कोश, भारद्वाज विनोद, नई दिल्ली 1989.
8. भारतीय मूर्ति शिल्प एवं स्थापत्य कला, भारती काजरीवाल मीनाक्षी, नई दिल्ली 2015 च.स. ।
9. समकालीन भारतीय कला, चतुर्वेदी ममता डॉ. 2013 च.स. ।
10. भारतीय चित्रकला का विकास, अग्रवाल आर. ए. मेरठ 1979.
11. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, प्रताप रीता, राजस्थानी हिंदी ग्रन्थ अकादमी 2011.
12. भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का इतिहास, नाथ सुतितेन्द्र पल जयपुर 1968.
13. लोक कला मूल्य और सन्दर्भ, मानावत डॉ. महेन्द्र।
14. लोक कला, सिंह सुषमा 2004.

15. ललित कलाओं का सौन्दर्य विधान जुगनू श्री कृष्ण 2005.

16. भारतीय कला के विविध आयाम नतानी प्रकाश नारायण 2005.

ENGLISH

17. Indian Contemporary Art Post Independence, Dalmia, Yashodharea and Datta, Ella and Sambrini Chaitnya and Jakimowicz, Marha and Datta, Santo, Ajanta Offset Ltd. 1997.

18. Worldly Affiliations Prtistic Practice, National Identity and Modenism in India 1930-1990, Khullar Sonal University of California Press California 2015.

19. Contemporary Indian Art, Jhaveri Amrita 2005.

20. Art Alive Gallery 2007.

21. Artists on Art, Indian Institute of Advanced Study 1989.

22. Contemporary Theory of Conservtion Salvador Vinas. 2005.

23. Contemporary Indian Studies Ghosh Pika.

24. Vadehra Art Gallery.

राष्ट्रीय

25 Breking barriers : An ode to Master Sculptor Mrinalini Mukherjee, Hindustan Times.

26. Sculptor Minalini Mukherjee uses hemp to Marry craft with high art, Madhu Jain.

27. Sculptor and Artist Mrinali Mukherjee Dies at 63, Outlook.

अन्तर्राष्ट्रीय

28 Indian SCUL PTOR Mrinalni Mukherjee dies at 65 By Siobhan Bent.

29 India Inside out critical Prepetives on the work of Mrinalini Mukherjee, Victoria lyan Journal Textile and cloth and culture, Vol.-I, 2003.

पत्र–पत्रिकाएँ

1. हिन्दुस्तान टाइम्स
2. आउट लुक
3. कला दीर्घा
4. त्रैमासिक
5. एन.डी.टी.वी.

पुस्तकालय एवं संग्रहालय

1. सेन्ट्रल लाइब्रेरी डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।
2. बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय लाइब्रेरी, आगरा ।
3. आगरा का महाविद्यालय लाइब्रेरी।
4. दिल्ली राष्ट्रीय संग्रहालय।
5. ललित कला संग्रहालय।
6. चंड़ीगढ़ संग्रहालय।
7. भारत भवन, भोपाल।

इन्टरनेट

1. www.contemporary Indian Art.com/mrinalimukherjee.
2. https://en. wikipedia.org.wiki. mrinalini mukherjee
3. https://the wire.in/2322/seculardeities enchanted-plants mrinalimukherjee at the ngmal.
4. http://www.livemint.com

1.	शोध का विषय	–	**मृणालिनी मुखर्जी की कला यात्रा – एक समीक्षात्मक अध्ययन**
2.	शोधार्थिनी का नाम	–	अन्जली भारद्वाज
3.	विषय/संकाय	–	कला /कला विभाग
4.	पंजीकरण संख्या	–	रजि0 नं0 145/2017 5729
5.	निर्देशिका का नाम	–	डॉ. (श्रीमती) बिन्दु अवस्थी
6.	पद	–	एसोसिएट प्रोफेसर – कला विभाग
7.	शोध संस्थान का नाम	–	बैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, बालूगंज, आगरा।
8.	कुल पृष्ठ संख्या	–	26
9.	ईमेल	–	anupamsharma56@yahoo.com
10.	फोन/मोबाइल	–	9758524554
11.	पता	–	गॉव व पोस्ट सुरजावली वाया खुर्जा जिला बुलन्दशहर पिन–203131